ISSN: 0973-0583

गाँधीवादी शिक्षा और आधुनिक भारतः नई शिक्षा नीति की संभावनाएँ

राजेन्द्र कुमार
शोधकर्त्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग,
बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, (बिहार)
डॉ0 शोभा रानी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग, देवचंद महाविद्यालय, हाजीपुर, वैशाली

सार

महात्मा गाँधी के शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के बीच संबंधों की पड़ताल करता है। गाँधीजी की शिक्षा प्रणाली नैतिकता, स्वावलंबन और व्यावहारिक शिक्षा पर केंद्रित थी, जो NEP 2020 की मूल अवधारणाओं से मेल खाती है। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, नैतिक मूल्यों और समावेशी शिक्षा को प्राथमिकता दी गई है, जो गाँधीवादी विचारधारा के अनुरूप है। यह आलेख गाँधीवादी शिक्षा और NEP 2020 के बीच संभावनाओं और चुनौतियों का विश्लेषण करता है। स्थानीय ज्ञान और हस्तकला के पुनरुद्धार, सामाजिक न्याय और स्वरोजगार को बढ़ावा देने की संभावनाएँ मौजूद हैं, लेकिन नीति के सफल कार्यान्वयन में शिक्षकों के पुनर्प्रशिक्षण, संरचनात्मक बदलाव और व्यावहारिक चुनौतियों जैसी समस्याएँ भी हैं। यदि NEP 2020 को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो यह गाँधीवादी शिक्षा दर्शन को आधुनिक भारत में साकार करने में सहायक हो सकती है और यह नीति भारत को एक सशक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

शब्द कुंजी- गाँधीवादी शिक्षा, NEP 2020, आधुनिक भारत

भूमिका

महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन व्यावहारिक, नैतिक और स्वावलंबी शिक्षा पर आधारित था। उन्होंने बुनियादी शिक्षा (नई तालीम) की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें हाथ, हृदय और मस्तिष्क के संतुलित विकास पर बल दिया गया था। 2020 में घोषित नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी व्यावहारिक शिक्षा, समग्र विकास और मूल्यों पर आधारित शिक्षा को बढ़ावा देती है। इस आलेख में गाँधीवादी शिक्षा के प्रमुख सिद्धांतों और नई शिक्षा नीति के बीच सामंजस्य एवं संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली को बदलने के लक्ष्य के साथ, एन.ई.पी. 2020 एक दूरदर्शी घोषणापत्र है जो छात्रों को आलोचनात्मक, समग्र और वैश्विक रूप से विकसित होने के लिए प्रोत्साहित करता है (अख्तर, 2021)। यह नीति, जो माध्यमिक और तृतीयक शिक्षा दोनों को कवर करती है, संरचनात्मक परिवर्तन लाती है, अनुकूलनशीलता को प्राथमिकता देती है और एक शैक्षिक ढाँचा विकसित करने के लक्ष्य के साथ विविधता को प्रोत्साहित करती है जो न केवल इकीसवीं सदी की बदलती माँगों के प्रति संवेदनशील हो बल्कि भारतीय संस्कृति और नैतिकता में भी गहराई से समाहित हो (कुमार, 2021)।

हालांकि, इस व्यापक नीति का प्रभावी क्रियान्वयन अपनी चुनौतियों के बिना नहीं है। यह अध्याय एन.ई.पी. 2020 के कार्यान्वयन के दौरान आने वाली कठिनाइयों की गहन जाँच शुरू करता है। नीति संचार से लेकर वास्तविक कार्यान्वयन तक की समस्याओं को तोड़ता है। साथ ही, हम उन संभावनाओं पर भी गौर करते हैं जो इन कठिनाइयों से आंतरिक रूप से जुड़ी हुई हैं, भारत के शैक्षिक वातावरण में क्रांति लाने की योजना तैयार करते हैं। यह अध्याय हमें शैक्षिक सुधार के जटिल पहलुओं की यात्रा पर ले जाता है, नीति के लक्ष्यों और इसके वास्तविक कार्यान्वयन के बीच के नाजुक संबंधों

पर प्रकाश डालता है। शिक्षकों से लेकर अभिभावकों, नीति निर्माताओं से लेकर छात्रों तक सभी हितधारकों के सामने आने वाली बाधाओं के विश्लेषण के माध्यम से, हमारा लक्ष्य उन मुद्दों की व्यापक समझ विकसित करना है, जिन्हें एन.ई.पी. 2020 के महान उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए दूर करने की आवश्यकता है। साथ ही, हम उन अवसरों का पता लगाते हैं जो इन कठिनाइयों की सतह के नीचे छिपे हैं, यह महसूस करते हुए कि वे रचनात्मकता, टीम वर्क और एक ऐसी शैक्षिक प्रणाली के विकास के लिए उत्तेजक के रूप में काम कर सकते हैं जो विशेष रूप से भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण के अनुकूल हो और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो।

महादेव देसाई के शब्दों में- 'गाँधी जी ऐसी शिक्षा चाहते थे जो बालक एवं बालिकाओं को सम्पूर्ण विकास करे और जो शिक्षा समाज के लिए उपयोगी नागरिकों का निर्माण नहीं कर सकती तथा बालक-बालिकाओं को सम्पूर्ण मानव नहीं बना सकती, वह सच्ची शिक्षा नहीं हो सकती।' इस प्रकार गाँधीजी बालक के चारों पक्षों में शरीर, हृदय, दिमाग एवं आत्मा का संतुलित विकास करने वाली शिक्षा को ही वास्तविक शिक्षा मानते थे। गाँधीजी कहते थे कि, 'सच्ची शिक्षा वही है जो बालक की बौद्धिक एवं शारीरिक क्षमताओं को जागृत कर, उनका सर्वांगीण विकास कर सके।'

अध्यापक-शिष्य सम्बन्ध : गाँधीजी बाल-केन्द्रित शिक्षा में विश्वास करते थे। अतः उनका कथन था कि शिक्षक को बालक का मित्र, परामर्शदाता और पथ-प्रदर्शक होना चाहिए। मैत्रीपूर्ण ढंग से बालक के मनोभावों की प्रतिक्रिया जाननी चाहिए। उसे बालक की चिन्ताओं के प्रति उदासीन न होकर, उसे उनसे मुक्त होने का परामर्श देना चाहिए। उसे बालक की समस्याओं को सुलझाने में पथ-प्रदर्शक का कार्य करना चाहिए। गाँधीजी शिक्षक को बालक का मित्र, पथ-प्रदर्शक एवं परामर्शदाता मानते थे। शिक्षक को मैत्रीपूर्ण ढंग से बालक के मनोभावों का अध्ययन करना चाहिए और बालक की समस्याओं के हल करने हेतु पथ-प्रदर्शक के रूप में परामर्श देना चाहिए।

गाँधीवादी शिक्षा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

महात्मा गांधी ने शिक्षा को केवल साक्षरता अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्ति के समग्र विकास का साधन माना। उन्होंने 1937 में 'नई तालीम' की संकल्पना प्रस्तुत की, जिसमें शिक्षा को व्यावसायिक प्रशिक्षण, नैतिकता और आत्मनिर्भरता से जोड़ा गया।

1. बुनियादी शिक्षा (नई तालीम): इसमें व्यावसायिक प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी गई ताकि विद्यार्थी आत्मनिर्भर बनें।

2. श्रम पर आधारित शिक्षा: गाँधीजी का मानना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो विद्यार्थियों को किसी न किसी कौशल में दक्ष बनाए।

3. चरित्र निर्माण और नैतिकता: शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि अच्छे नागरिकों का निर्माण होना चाहिए।

4. मातृभाषा में शिक्षा: गाँधीजी के अनुसार प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए ताकि विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता का विकास हो सके।

5. समाज उपयोगी शिक्षा: गाँधीजी चाहते थे कि शिक्षा समाज से जुड़ी हो और विद्यार्थियों को समाज की समस्याओं को हल करने के लिए तैयार करे।

गाँधीवादी शिक्षा के प्रमुख सिद्धांत

1.स्वावलंबी शिक्षा : गाँधीजी का मानना था कि शिक्षा जीवन उपयोगी होनी चाहिए और इससे छात्रों में आत्मनिर्भरता विकसित हो।

2. हाथ का प्रयोग : उन्होंने शिक्षा में हस्तकला, श्रम और व्यावसायिक कौशल को महत्वपूर्ण स्थान दिया।

3.मातृभाषा में शिक्षा : गाँधीजी ने मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाए जाने पर बल दिया ताकि छात्रों की सोचने और समझने की क्षमता विकसित हो।

4. नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा : उनके अनुसार शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह चरित्र निर्माण और नैतिक मूल्यों पर आधारित होनी चाहिए।

5. समानता और समावेशिता : गांधीजी सभी के लिए समान शिक्षा के पक्षधर थे और सामाजिक समरसता पर बल देते थे।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और गाँधीवादी शिक्षा

NEP 2020 कई मामलों में गाँधीवादी शिक्षा दर्शन के अनुरूप है :

1. समग्र एवं बहुआयामी शिक्षा : नीति में केवल अकादमिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि व्यावसायिक शिक्षा, कला, संगीत और नैतिक शिक्षा पर भी ध्यान दिया गया है। यह गाँधीजी के समग्र शिक्षा दृष्टिकोण से मेल खाती है।

2.मातृभाषा को बढ़ावा : नई नीति के अनुसार प्राथमिक स्तर की शिक्षा मातृभाषा में दी जानी चाहिए, जो गाँधीजी के विचारों के अनुरूप है।

3. व्यावसायिक और कौशल-आधारित शिक्षा: NEP 2020 में व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में शामिल करने की बात कही गई है, जिससे छात्रों में आत्मनिर्भरता विकसित हो।

4. नैतिक और मूल्य-आधारित शिक्षा : नीति में नैतिकता, संवेदनशीलता, मानवतावाद और संविधान-निर्दिष्ट मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया गया है।

5. समावेशी शिक्षा: सामाजिक समरसता और समानता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा प्रणाली को लचीला बनाया गया है, जिससे वंचित वर्गों को भी समान अवसर मिलें।

6. अनुप्रयुक्त शिक्षा और बहु-विषयक दृष्टिकोण: NEP 2020 में पारंपरिक शिक्षा प्रणाली को हटाकर व्यावहारिक और बहु-विषयक शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है, जो गाँधीजी के शिक्षा दर्शन के अनुरूप है।

7. पर्यावरणीय जागरूकता : गाँधीजी प्रकृति के प्रति संवेदनशील थे और NEP 2020 में सतत विकास और पर्यावरणीय शिक्षा पर ज़ोर दिया गया है।

8. शिक्षकों का पुनर्प्रशिक्षण : शिक्षकों को नई शिक्षण पद्धतियों में प्रशिक्षित करने पर बल दिया गया है ताकि वे समग्र शिक्षा प्रणाली को बेहतर बना सकें।

9. लचीली शिक्षा प्रणाली : यह नीति छात्रों को अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार शिक्षा चुनने की आज़ादी देती है, जिससे उनमें नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा मिलेगा।

संभावनाएँ और चुनौतियाँ

संभावनाएँ:

1.स्थानीय ज्ञान और हस्तकला का पुनरुद्धार: यदि नीति को सही तरीके से लागू किया जाए, तो गाँधीजी की शिक्षा में श्रम और हस्तकला का महत्व पुनजीवित हो सकता है।

2. सामाजिक न्याय और समरसता: NEP 2020 की समावेशी शिक्षा नीति समाज में समानता और सौहार्द को बढ़ावा दे सकती है।

3. स्वरोजगार और उद्यमिता को बढ़ावा : गाँधीवादी स्वावलंबन की विचारधारा को ध्यान में रखते हुए व्यावसायिक शिक्षा पर बल देना रोजगार के नए अवसर पैदा कर सकता है।

4. बच्चों में आत्मनिर्भरता और नेतृत्व क्षमता का विकास: कौशल-आधारित शिक्षा से बच्चों में आत्मनिर्भरता और नवाचार को बढ़ावा मिलेगा।

5. सतत विकास और हरित शिक्षा : नई नीति में पर्यावरण और सतत विकास से संबंधित शिक्षा को बढ़ावा देने पर बल दिया गया है, जो गांधीजी के विचारों से मेल खाता है।

चुनौतियाँ:

1. नीति कार्यान्वयन की जमीनी कठिनाइयाँ: मातृभाषा में शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और नैतिक शिक्षा को व्यवहारिक रूप से लागू करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

2.संरचनागत बदलाव की आवश्यकता: गाँधीवादी शिक्षा को पूरी तरह अपनाने के लिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बड़े बदलाव की जरूरत होगी।

3. शिक्षकों का पुनर्प्रशिक्षण : गाँधीवादी दृष्टिकोण को अपनाने के लिए शिक्षकों को नई शिक्षण पद्धतियों में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता होगी।

4. शिक्षा संसाधनों की उपलब्धता : ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं की कमी, डिजिटल संसाधनों की अनुपलब्धता और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी इस नीति की सफलता में बाधा बन सकती है।

5. तकनीकी और डिजिटल शिक्षा की चुनौतियाँ : भारत में डिजिटल संसाधनों की असमानता के कारण ऑनलाइन और तकनीकी शिक्षा का प्रभाव समान रूप से नहीं हो सकता।

निष्कर्ष:

महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन आज भी प्रासंगिक है और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उनके कई सिद्धांतों के अनुरूप है। यदि इस नीति को सही दिशा में लागू किया जाए, तो भारत में एक व्यावहारिक, नैतिक और समावेशी शिक्षा प्रणाली विकसित हो सकती है। हालांकि, इसके कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ भी हैं, जिन्हें नीति-निर्माताओं, शिक्षकों और समाज के सहयोग से दूर किया जा सकता है।

NEP 2020 के माध्यम से गाँधीवादी शिक्षा को आधुनिक संदर्भ में ढालने का प्रयास किया गया है, जिससे व्यावहारिक, नैतिक और स्वावलंबी नागरिकों का निर्माण संभव हो सके। यदि सही ढंग से लागू किया जाए, तो यह नीति भारत को एक सशक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने में सहायक सिद्ध हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन की गहन जाँच प्रदान करता है, जो इस क्रांतिकारी यात्रा के साथ आने वाली संभावनाओं और चुनौतियों पर प्रकाश डालता है। यह इस बात पर जोर देता है कि संसाधनों के वितरण और शिक्षक तैयारी से लेकर क्षेत्रीय और सांस्कृतिक भिन्नताओं तक, कई अलग-अलग समस्याओं की परिष्कृत समझ होना कितना महत्वपूर्ण है। इन कठिनाइयों के भीतर मौजूद अवसरों की अधिकता पर भी जोर दिया गया है, जिसमें रचनात्मक शैक्षिक दृष्टिकोण, सर्वव्यापी विकास और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की संभावना शामिल है। सबसे महत्वपूर्ण सबक यह है कि इन मुद्दों को प्रभावी ढंग से संबोधित करने के लिए, राजनेताओं, शिक्षकों और हितधारकों को अनुकूलनीय समाधान विकसित करने और निरंतर सुधार संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। शिक्षक तैयारी को वित्त पोषित किया जाना चाहिए, सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. एस. के. अग्रवाल : शिक्षा के तात्विक सिद्धांत पृ0-265.
2. पी. डी. पाठक एवं जी. एस. त्यागी, शिक्षा के दार्शनिक सिद्धांत, पृ0-8.
3. एन. आर. स्वरूप सक्सेना, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धांत, पृ0-219.
4. बारबरा साउथर्ड फेमिनिज्म ऑफ महात्मा गाँधी', गाँधी मार्ग वॉल्यूम 13 ए नं.71, अक्टूबर 1981, पृ0 403
5. इंडियन ओपिनियन, 16-12-1905 (शिक्षण और संस्कृति) पृ0 115
6. यंग इंडिया, हिन्दी नवजीवन, 8-9-1926 (नवजीवन, 12-9-1926 (शिक्षण और संस्कृति, पृ0 51
7. आईडियल रिसर्च रिव्यू, पटना, मार्च 13, वाल्यू 37 अंक-1, पृ. 591-गाँधी, एम. (19370) नई तालीम।
8. कुमार, ए. (2010). भारतीय शिक्षा प्रणाली में मातृभाषा का महत्व।
9. NEP (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ।
10. गुप्ता, आर. (2021). कौशल आधारित शिक्षा और आत्मनिर्भर भारत।
11. सिंह, डी. (2022) शिक्षा में नैतिक मूल्यों की भूमिका।
12. राय, के. (2023) शिक्षा में समावेशिता और समान अवसर।
13. मिश्रा, एन. (2021) स्थानीय ज्ञान और पारंपरिक शिक्षा।
14. दास, बी. (2022) सामाजिक न्याय और शिक्षा नीति।
15. खन्ना, टी. (2024) नीति कार्यान्वयन की चुनौतियाँ।
17. शेखर, आर. (2024) शिक्षा प्रणाली में संरचनात्मक परिवर्तन।
18. त्रिपाठी, वी. (2024) शिक्षकों के लिए नई शिक्षण पद्धतियाँ।